राजनीतिक सिद्धन्त के पतन की समीक्षा

Dr. RAKESH KUMAR RAM
S/O MAKHAN RAM
MA, Ph.D, B.Ed, MA-Ed
CTET, BTET, APS (AWES)
& UGC NET- Qualified

राजनीति विज्ञान के समकालीन विद्वानो में राजनीतिक चिन्तन की स्थिति, वर्तमान स्तर और भविष्य पर बहस छिड़ी हुई है। बहस यह है कि राजनीतिक सिद्धन्त का ह्रास या पतन हुआ है कि मृत हो चुका है। इस प्रकरण पर विद्वानो दो समूहो मे विभाजित है। प्रथम गुट जो राजनीतिक सिद्धन्त का पतन मानते हैं उनमें डेविड इस्टन, अल्फ्रेडकोवान डाल्टन लासवैल इत्यादि हैं।

दूसरा गुट माइकेल ओकशॉट, हन्ना आरन्ट, लियो स्ट्रॉस, एरिक वोएगालिन, क्रिश्चियन बे, हरबर्ट माकर्यूजे, थर्सवाई और गुल्ड हैं।

1951 ई0 जे Journal of politics मे ईस्टन ने The Decline of Modern Political Theory लेख प्रकाशित कराया जिस पर राजनीतिक शास्त्रियों के बीच ध्यान आकृष्ट हुआ। पुनः 1953 ई0 में Political Science Quaterly में कब्बन ने The Dicline of Political Theory लेख प्रकाशित कराया। जिससे राजनीतिक सिद्धान्त का पतन होने का संकेत मिलने लगा। आगे चलकर अनेक विद्वानो ने भी सर्मथन किया। खासकर अमरिकी वैज्ञानिको राजनीतिक सिद्धान्तो का पतन एवं निधन का वर्णन किया। पीटर, लासवैल तथा रार्बट डहल ने इसे मृत्यु तक स्वीकार किया। P.H पैड्रिज का मानना है कि राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास का उत्तरदायित्व जनतंत्र की विजय पर लादा जाना चाहिए।

एडवर्ड शील के अनुसार ''राजनीतिक सिद्धांत के ह्रास के कारण आज के पश्चिमी समाज में सामाजिक समूहों के सिद्धांत का पनपना है।

मार्क्स और J.S मिल के बाद महत्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धांतकार नही हुआ है। जबकि 20 वी शतावदी के मध्य मे अनेक सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन हुए है। वास्तव में ईस्टन और कब्बन का मानना सही है कि आधुनिक विश्व में राजनीतिक चिन्तन शिथिल है। जब राजनीतिक शक्ति संघर्ष में बदल जाती है, तब सिद्धान्तों का पतन हो जाता है ; जैसे – रोमन साम्राज्य के दिनों में हुआ था।

डेविड इस्टन के अनुसार पतन का कारण –

(i) **अनुकूल वातावरण का अभाव** – प्रतिकूल परिस्थितियों में सिद्धान्त बनता और विकसित होता है। सामाजिक संघर्ष, हलचल, परिवर्तन एवं प्रतियोगिता के दौरान अनेक प्रकार की सामग्री मिलती है जिसे विद्वानों के बीच अनेक प्रकार की विचारधारा उत्पन्न होती है। जैसे – प्राचीन युनान के नगर–राज्यों के सामाजिक विपल्व में प्लूटो और अरस्तु जैसे विचारक उत्पन्न हुए। एथेंस सर्वश्रेष्ठ लोकतांत्रिक नगर राज्य में सुकरात के कब्र पर आर्दश राज्य की

चादर ओढ़े प्लेटो का जन्म हुआ। मध्य–युग में चर्च (विशप और पोप) और राज्य एवं सम्राट के बीच प्रतिद्वंदिता के कारण अनेक सिद्धांतकार पैदा हुए।

सबल और महान साम्राज्य के लिए राज्य–कला का सिद्धान्त मैकियावली ने दिया। इंग्लैंड में राजा और संसद का संर्घष 1640 से 1645 के बीच गृह–युद्ध की सामाग्री पर हॉब्स ने लेबियाथन का सिद्धांत दिया। 18वी शताब्दी में फ्रांस में राजतंत्र के खिलाफ व्यक्ति के स्वतंत्रता का सिद्धांत प्रस्फूटित हुआ। साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी सोच के कारण पूँजीवादी व्यवस्था शुरु हुई, जिसके दुष्यप्रभाव से बचाव हेतु मार्क्स और एंजिल्स ने वैज्ञानिक समाजवाद सिद्धान्त दिया। आज लोकप्रिय जनतांत्रिक शासन–व्यवस्था में सामाजिक एवं राजनीतिक गंभीर परिवर्तन का अभाव है। विश्व के अधिकतम देशो में लगभग एक जैसा सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवस्था अपनाई गयी है जिसके कारण अनुकुल परिस्थिति के अभाव के कारण आज राजनीतिक सिद्धान्त उत्पन्न नहीं हो पाया है।

इतिहासवाद – राजनीतिक सिद्धान्त में गिरावट या उत्तरदायी है। इस्टन का मानना है कि इनके सिद्धान्तो में परिवर्तनशिलता का अभाव है। मानव जीवन की परिवर्धित परिस्थियों में समायोजित आदर्श पूर्ण जीवन की अन्वेषण की आवश्यकता है न कि पुराने सिद्धान्त की नजरिया से आज की सामाजिक मूल्य का मूल्यांकन करना चाहिए।

इसलिए सिद्धान्तशास्त्री अपनी सार्थकता खो बैठे है। इस्टन ने इन ऐतिहासिक विश्लेषण कर्त्ताओं को संस्थावादी, अन्तक्रियावादी, मिथक और भौतिकवादी कहा है। राजनीतिक सिद्धान्त जो इतिहास पर आधारित है –

Sabine – A history of political theory

Carlyle & Carlyle – A history of mediaeval Political theory in the west – (6 vol)

Allen – A history of Political theory in the sixteenth century

Dunning – A history of Political theory (3 vol)

इसी के अनुसार मैकविलैन, ए0डी0, लिंडसे जैसे विद्वानों ने इतिहास को ध्यान में रखकर राजनीतिक सिद्धान्त की रचना की है।

अपेक्षावादी दृष्टिकोण – पश्चिमी देशों द्वारा स्वीकृत राजनीतिक मूल्यों को राजनीतिक शास्त्र के विद्वानों ने सर्वव्यापी एवं शाश्वत रुप में स्वीकृत विचार मान लिया है। तथ्यों की बजाय मूल्यों को सर्वोच्चता दी जिसके कारण ईस्टन ने नैतिक अपेक्षावाद का नाम देते हुए राजनीतिक सिद्धान्त का ह्रास माना।

एल्फर्ड कोबान के अनुसार पतन :–

The decline of political theory 1953 में माना है कि राजनीतिक सिद्धान्त परिवर्तनशील होते है। लेकिन समकालीन युग में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसमें न तो परिवर्धन और नहीं परिमार्जन हुआ है। इस प्रकार इनके अनुसार राजनीतिक शास्त्र का पतन निम्नलिखित कारणों से हुआ है :–

(i) जनतंत्र की सफलता – जनतंत्र विश्वव्यापि शासन व्यवस्था है जिसमें लोग अपने उद्देश्य की पूर्ति सफलतापूर्वक करते है। जिसके कारण गंभीर क्रांति का अभाव हो गया है, फलतः बर्फ या बैन्यम जैसे महामानव अनुपस्थित सा लग रहे है।

(ii) सत्तावादी राजनीति – इटली के मैक्यावली, इंग्लैण्ड के हाब्स और जर्मनी के मैक्सबेबर ने इस सत्तावादी विचार को प्रस्तुत किया। इनलोगों ने राजनीति के अध्ययन में मूल्यों की स्थिति को शक्ति सिद्धान्त की बेदी पर चढ़ा दिया।

इतिहास की आलोचना :– कोबां का कहना है कि राजनीतिक सिद्धान्त का व्यवहारिक राजनीति और तथ्यों से कोई संबंध नही होता है। इस प्रकार यह पतन की ओर बढ़ रहा है। मात्र अध्ययन का विषय बनकर रह गया है।

पुराने सिद्धान्तकार किसी राजनीतिक दल का मार्गदर्शक हुआ करते थे। अपने सिद्धान्तों को सतारुढ़ दल के द्वारा व्यवहार में लाकर उनका मूल्यांकन करते थे। इस प्रकार सिद्धान्तो का निर्माण हुआ करता था। जबकि आज सिर्फ शैक्षणिक अध्ययन का विषय बनाये रखते हैं।

नैतिकता में कमी – नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है जो सिद्धान्त की रचना में कही न कही रुकावट बन रही है।

सकारात्मकवाद और ऐतिहासिकवाद –मार्क्स, हीगल और प्लेटो ने आर्थिक समस्यायों को एतिहासिक परिप्रेक्षय में देखा और समस्या का हल निश्चित निष्कर्ष निकालने पर बल दिया। फ्रांस के आगस्टाईन काण्ट आदि विचारकों ने सकरात्मकवाद का सिद्धान्त देकर राजनीतिक सिद्धान्त को ठोस तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक रुप प्रदान किया। इस प्रकार राजनीति सिद्धान्त में समरसता और नमनशीलता निकालकर ठोस रुप दिया गया जो राजनीति सिद्धान्त का पतन प्रमाणित होता है।

दिषाहीन राष्ट्र **सिद्धान्त** – उदारवाद, फाँसीवाद, समाजवाद और साम्यवाद सभी परिवर्तन प्रक्रिया में उलझी हुई है। उदारवाद, समाजवाद के साथ पूँजीवाद साम्यवाद के साथ मिलकर मिश्रितवाद के प्रयास में है। इस प्रकार लगता है कि इस भूमंडलीकरण निजीकरण और उदारीकरण के सिद्धान्त में समाजवादी एवं लोक कल्याणकारी, व्यक्तिवादी एवं बहुलवादी सिद्धान्त मिलकर अपनी दिशा खो चुके है।

निष्कर्ष :– आधुनिक समाज में सबसे अधिक 'राजनीतिक सिद्धान्त' विवाद का विषय बन गया है। आज पूरे विश्व में लगभग एक समान राजनैतिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक वातावरण हैं, जिसमें लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के कारण अत्यधिक असंतोष का अभाव हो गया है, जो चिन्तकों को शिथिल बना दिया है। हालांकि अन्तराष्ट्रीय जगत में अनेक पर्यावरणीय एवं मानवीय समस्याएँ विद्यामान है, जिस पर चिन्तन की आवश्यकता है।

संदर्भ –

1. राजनीति शास्त्र (सुनिल कुमार शर्मा)
रमेश पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
2. राजनीतिक विज्ञान – अशोक कुमार
उपकार प्रकाशन आगरा
3. राजनीतिक सिद्धान्त गाँधी जी राय
भारती भवन पटना
4. राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त
डा0 पुखराज जैन– साहित्य भवन, आगरा